स्त्री विमर्श : हिंदी साहित्य में महिलाओं का चरित्र चित्रण

शोध छात्रा **सुरेखा ज्ञानदेव आवटे** प्रो .रामकृष्ण मोरे कला , वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालयआकुर्डी , पुणे - ४१००४४
शोध निर्देशक **डॉ. बाबासाहेब शेख** सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक हिंदी विभाग पुना कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स सायंस अँड कॉमर्स कॅम्प पुणे – ४११००१

प्रस्तावना –

विमर्श का अर्थ है की , किसी बात का विचार या विवेचन , समीक्षा तथा परीक्षा करना I डॉ. रोहिणी अग्रवाल के अनुसार विमर्श का अर्थ है , जीवंत बहस करना I किसी भी समस्या या घटना को एक ही दृष्टिकोण से न देख कर वैचारिक रूप से उसे समझकर मानवीय संदर्भ में निष्कर्ष तक पहुँचना I २१ सदी विमर्शों का जग हैं I आज समकालीन साहित्य में पर्यावरण विमर्श , किसान विमर्श , आदिवासी विमर्श , दलित विमर्श तथा स्त्री विमर्श एक प्रमुख विषय के रूप में सर्वाधिक चर्चा में है I इनमे से मैंने नारी विमर्श पर विवेचन करने का प्रयास किया है I साहित्य में नारी की महानता बताते हुवे कहा गया हैं -

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः। यत्र तास्तु न पूज्यंते तत्र सर्वाफलक्रियाः।

चाणक्य नीति के इस श्लोक में यह बताया गया है कि जिस स्थान पर नारी की पूजा कि जाती है वहां देवी-देवता स्वयं निवास करते हैं। वहीं जहां नारी की पूजा नहीं होती है या उन्हें हीन भावना से देखा जाता है वहाँ सदैव किसी न किसी प्रकार की परेशानी उत्पन्न होती रहती है और वहाँ सभी कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। इसलिए समाज में नारी का स्थान देवी-देवताओं के स्थान के बराबर है। उनकी निंदा या उनका अपमान करने से स्वयं देवी-देवता क्रोधित हो जाते हैं। प्रत्येक युग में हमें यह बताया गया है परंतु हर युग में नारी को सिर्फ अपमानित किया गया हैं I

आदियुग में सीता मैया , द्वापर युग मे द्रोपादी और कलयुग में सावित्रीबाई जैसे अनेक महिलाओं को अपमानित किया गया I अपमानित होकर भी आज इतिहास में इनका नाम सुवर्ण अक्षरों में लिखा गया है I इसी महान सर्वश्रेष्ट महिलाओं के कार्य को साहित्यकारों ने हमारे सामने रखा है ताकि फिर से कोई स्त्री को अपमानित ना करे I कोई यह हिमाकत करता भी है तो उसे कैसा दंड देना चाहिए यह कार्य साहित्य सिखाता है I साहित्य का अर्थ ही सबका हित करने वाला होता है I साहित्यकार उपन्यास , कहानी , निबंध , नाटक आदि लिपि बद्धता से समाज का आएना हमारे सामने रखते हैं I

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श के अनेक चरित्र चित्रण किये गए है I जाभोजी विश्नोई संप्रदाय , में और साहित्य में नारी विमर्श का मार्मिक चित्रण किया है I 1730 में राजस्थान के मारवाड़ में खेजड़ली नामक स्थान पर जोधपुर के महाराजा द्वारा हरे पेड़ों को काटने से बचाने के लिए ,अमृता देवी ने अपनी तीन बेटियों आसू , रत्नी और भागू के साथ अपने प्राण त्याग दिए। उसके साथ 363 से अधिक अन्य बिश्नोई , खेजड़ी के पेड़ों को बचाने के लिए मर गए I

खेजड़ली बलिदान की नेत्री श्रीमती अमृता देवी का उद्घोष-

'सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तोजाण'

आज भी पर्यावरण प्रेमियों की प्रेरणा को द्विगुणित करता है। धन्य है , वह पंथ एवं पंथ के प्रवर्तक, जिनके अनुयायी कहते हैं- अगर हमारे शीश कटने पर भी वृक्ष की रक्षा हो जाये, तो भी इस सौदे को सस्ता समझना चाहिए। मध्यकाल में संत साहित्य सं. 1508 में मरूधरा में एक महापुरुष का अवतरण हुआ जिनका नाम था- गुरु जाम्भोजी था। उन्होंने मरू स्थल को रोकने , अकाल का समाधान करने तथा प्राणी मात्र के जीवन को सुरक्षित रखने हेतु आज से करीब 525 वर्ष पूर्व बिश्नोई पंथ की स्थापना की तथा जन-जन में पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाई। सं १७३० राजस्थान में महाराज अभयसिंग अपने लिए एक बहुत बड़ा महल बनवाना चाहते थें I उन्होंने मंत्री को महल के लिए लकड़ी लाने का आदेश दिया I मंत्री खेजड़ली गाँव में पहुँचकर लकड़ी तोड़ने का साहस करता है I तभी पेड़ काटने वाली कुल्हाड़ी की आवाज सुनकर अमृता देवी वहा जाकर उन्हें रोकती है I वह कहत्ती है की यह पेड़ पोधे हमारे बच्चे जैसे है I आप इसे तोड़ नहीं सकते I परन्तु मंत्री राजा का आदेश है कहकर पेड़ों को तोड़ना जारी रखते है I तभी अमृता देवी एक पेड़ से लिपट जाती है और कहती है, 'सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तोजाण' यह सुनकर और माँ का बलिदान देखकर उनकी तीनो बेटीयां आसू , रत्नी और भागू एक एक पेड़ से लिपट जाती है I दुष्ट मंत्री पेड़ो के साथ उन्हें भी कटाने का आदेश देता हैं I अमृता देवी अपने गुरु जाम्भोजी ने दि हुई सिख और गुरु आज्ञा का पालन करते हुवे पेड़ों को बचाने के लिए बलिदान देती हैं और अमृता देवी फिर से नारी की महानता को इस युग के सामने रखती हैं I उनका बलिदान देखकर गाँव के ३६३ लोग एक एक पेड़ से लिपट जाते हैं I मंत्री ने ३६३ लोगो को पेड़ो के साथ काँट दिया I राजा को जब यह बात पता चली तो उन्होंने पेड़ ना काटाने का आदेश देकर बिश्नोई समाज की माफ़ी मागी।

इस प्रकार अमृता देवी का बलिदान समाज के लिए एक बहुत आदर्श माना गया l चिपको आंदोलन में भी पर्यावरण रक्षा के लिए बडी संख्या में महिलाओं ने सहभाग लिया था l इन सभी महिलाओं का नेतृत्व श्रीमती गोरा देवी ने किया था l नारी ने हमेशा से हर क्षेत्र में अपने बलिदान से इतिहास रचा है l

शांता कुमार अपने उपन्यास के माध्यम से नारी विमर्श का मार्मिक चित्रण करते हैं l नारी की मानसिक स्थिति के साथ-साथ , माँ-बेटी , पिता-पुत्री , प्रेयसी–प्रियकर , विद्यार्थी–अध्यापिका आदि के संदर्भ में वर्णन उनके उपन्यास में परिलक्षित होता है l वृंदा उपन्यास में शांता कुमार का बहुचर्चित प्रसिद्ध उपन्यास हैl इसउपन्यास की नायक किशोर और प्रमुख पात्र वृंदा नामक एक युवती है l जो एक निम्न वर्ग की हिमालय की वादियोमे रहने वाली एक सुन्दर और सुशील लड़की हैl जो अपनी पढाई करने के लिए पेडो का जंगल और बर्फीले रास्तो से गुजरती थी l एक दिन बहुत तेज बारिश के वजसे वह फिसल कर गिर गई l तभी अचानक किसीने उसको उसकी किताबो का बस्ता पकड़कर उठाया , वह किशोर था l किशोर एक प्रतिष्ठित और उच्च घर का लड़का था l

धीरे-धीरे दोनों में बातचित होती रही l वृन्दा और किशोर ने दसवी तक पढाई पूर्ण कर ली l आगे की पढाई के लिए किशोर शहर चला गया l अब वृन्दा और किशोर का मिलना-जुलना कम हो गयाl किशोर के पिता शक्तिचंद को किशोर एक निम्न जाती के लड़की से बातचीत करना अच्छा नहीं लगता l किशोर एक पर्यावरण प्रेमी और नेक दिल लड़का था l शक्तिचंद अपना पेड़ों का कारोबार बढ़ाने के लिए किसनो से झुठ बोलकर कम दामो में पेड़ों की कटाई करवाता था l पर्वत पर हो रहे पेड़ों की कटाई के विरुद्ध वृन्दा आवाज उठाती है और किसानो को जागृत कराती है l

वृन्दा ने भी अपने पढाई पूरी कर अरुणोदय विद्यालय में अध्यापन का कार्य शुरू किया l परंतु किशोर के बिना उसका दिल किसी काम में लग नहीं रहा था l छुटटीयो मे किशोर वृन्दा से मिलने आता था l यह बात किशोर की माँ को पत्ता चली तभी माँ ने किशोर से वृन्दा के साथ शादी ना करने का वचन ले लिया l बीमार माँ की यह आखरी इच्छा पूर्ण करने के लिए किशोर वचन में बंध जाता हैl कुछ ही दिनों में पूरे गाँव के पेड़ तोड़ दिए जाते है l गाँव पर बादलों की काली घटाओं के साथ बिजली चमकती है l एसा लगा रहा था की हजारो मन पानी एकदम अचानक गिरा दिया गया l

बादल फट गए थे l पानी के प्रवाह से पास के घर , वृक्ष पुल-सब बहे जा रहे थे l वृन्दा फुट-फुट कर रो रही थी l पूरा गाँव प्रलय के सर्वनाश से सिसक रहा था l इस विनाशकारी स्थित्ती में उसे किशोर की यादआ रही थी l परंतु वचन में बंधा किशोर उससे दूर निकल चूका था l इस भयंकर परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए वृन्दा शाश्त्री जी के शिबिर में जाकर शांत हो कर अपने मन में छुपे किशोर के प्रेम को भुलाकर अपने नए जीवन की और कदम बढाती है l

वृन्दा अपना पूर्ण जीवन उस गाँव में कटे पेड़ो की जगह नए पेड़ लगाकर फिर से एक नई शुरवात करती है l वृन्दा अपना पूरा लक्ष अपना पूरा जीवन इन पेड़ पोधे लगाने और उनके संरक्षण में लगा देती हैं l इस तरह से शांता कुमार अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्री प्रेम का त्याग , बलिदान , निस्वार्थप्रेम आदि पर नारी विमर्श कर स्त्री मन की भावनाओं का मनोविश्लेषण करते है l

निष्कर्ष –

स्त्री विमर्श - समाज में नारी कई सारी समस्याओं से घिरी रहीने के बावजूद भी वह अपना अस्तित्व बचाने के लिए समाज से टकराती है और अपना जीवन सफल बनाती हैं l आज भी समाज में स्त्री लाचार और बेबस ही है l आज की नारी भले ही हर क्षेत्र में सफल हो परंतु उसकी सुरक्षा पर आज भी प्रश्नचिन्ह ही हैl नारी को यह समाज कब समझेगा ? कब उसे सुरक्षित जीवन व्यथित करने देगा ?

अमृता देवी ने अपनी तीन बेटियों आसू , रत्नी और भागू के साथ अपने प्राण त्याग दिए। उनके बलिदान को हमें व्यर्थ नहीं जाने देना है l हमारी वसुंधरा भी एक स्त्री का रूप ही है उसे सजाते हुवे मान – सन्मान देना चाहिए l वृन्दा को निचली जाती का कलंक उसे अपने किशोर से सदा के लिए दूर ले गया l वही प्रेम वृंदा ने पेड़ो से निभाया l फिर से एक बार इस समाज की रक्षा की जिम्मेदारी नारी ने निभाई है l यह अनमोल सिख साहित्य के माध्यम से रचनाकार हमारे सामने रखते है l

संदर्भ –

1. हिंदी शब्द कोष -
2. हिंदी साहित्य विविध विमर्श : जन्भोई साहित्य २०२३ – पृष्ट ९५
3. शांता कुमार – वृन्दा – २०१८
4. Chipko movement in hindi | Chipko Andolan | चिपको आंदोलन क्या है
5. From Wikipedia, the free encyclopedia For other uses, see Bishnoi (surname).